नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

सहायक प्रोफेसर

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

E-mail- dkskatheriya@yahoo.com

Mo.No- 9922704241

डॉ. कठेरिया के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता पर नागपुर में शोध

नागपुर के 98 प्रतिशत लोग हैं पर्यावरण के प्रति सजग

सांस्कृतिक-धार्मिक मान्यताएं पर्यावरण प्रदूषण को प्रभावित करती है।

* पर्यावरण संकट नागपुर शहर ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय है। समय रहते अगर पर्यावरण प्रदूषण को नहीं रोका गया तो आनेवाला समय बहुत ही बिस्फोट होगा जो पूरे सृष्टि का विनाश करेगा।
* 87 प्रतिशत लोगों का मानना है कि दीपावली में जलाए जाने वाले बम-पटाखे पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।
* पर्यावरण प्रदूषण में सांस्कृतिक, धार्मिक मान्यताओं पर 93 प्रतिशत प्रतिभागियों का मत है कि पूजा सामाग्री का विसर्जन पर्यावरण प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है वहीं मूर्तियों के विसर्जन के संबंध में 94 प्रतिशत और अस्थियों के विसर्जन को 80 प्रतिशत प्रतिभागी पर्यावरण के लिए हानिकारक मानते हैं।

जलवायु परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारण है पर्यावरण प्रदूषण

त्योहारों, उत्सवों के कारण पूरे देश में बढ़ रहे पर्यावरण संकट को देखते हुए महात्मा गांधी अंतरारष्ट्रीय हिन्दी विश्वविविद्यालय, वर्धा के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के सहायक प्रोफेसर डॉ. धरवेश कठेरिया के नेतृत्व में नागपुर शहर में विषय- 'पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता' पर दीपावली को ध्यान में रखते हुए शोध हुआ।

आज पर्यावरण संकट को बढ़ावा देने में त्योहारों का महत्वपूर्ण योगदान है। शोध के दौरान प्राप्त कुछ आंकड़े चैंकाने वाले सामने आए हैं। नागपूर शहर के 98 प्रतिशत प्रतिभागी पर्यावरण संरक्षण के संबंध में जागरूक हैं। 68 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि पर्यावरण संकट का सबसे महतवपूर्ण कारण पेड़ों की कटाई है। पर्यावरण संरक्षण के बेहतर उपाय पर बात करने पर 39 प्रतिशत लोगों ने अपने उत्तर में कहा कि पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपन सही उपाय है।

प्रकृति का निर्माण जल, वायु, अग्नि, आकाश और पृथ्वी पांच तत्वों से मिलकर बना है। यदि इनमें से किसी में भी असंतुलन होता है तो उसका रूप बहुत ही भयावह होगा जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरण असंतुलन के रूप में देखा जा रहा है। मनुष्य संपूर्ण जीव-जगत का केंद्र बिंदु है। सभी जीवों में श्रेष्ठ जीव होने के नाते मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन किया। वर्तमान में मनुष्य जनसंख्या वृद्धि, उपभोक्तावाद, वैश्वीकरण के मकड़जाल में फंसकर प्रकृति के नैसर्गिक सुख-संसाधनों को खोता जा रहा है। उसे यह भी पता नहीं है कि जिन भौतिक संसाधनों के पीछे वह भाग रहा है, वह उसके भविष्य के परिणामों से अवगत नहीं है।

शोध का ह्वाला देते हुए डॉ. कठेरिया ने कहा कि पर्यावरण संकट नागपुर शहर ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय है। समय रहते अगर पर्यावरण प्रदूषण को नहीं रोका गया तो आनेवाला समय बहुत ही बिस्फोट होगा जो पूरे सृष्टि का विनाश करेगा। प्रदूषण रोक-थाम का एक ही उपाया है पर्यावरण के प्रति जागरूकता। पर्यावरण संकट से उबरना है तो देश के सभी नागरिकों को जागरूक होना पड़ेगा। त्योहारों की बात पर उन्होंने बताया कि त्योहारों के समय में प्रदूषण स्तर शहर ही नहीं गांवों में भी बढ़ जाता है। इस पर नियंत्रण की आवश्यकता है।

शोध के दौरान यह पाया गया कि त्योहार, पर्यावरण प्रदूषण का सबसे महत्वपूर्ण कारक है। साथ ही त्योहारों में जलाए जा रहे पटाखों से ध्वनि प्रदूषण के साथ-साथ वायु प्रदूषण का भी स्तर बढ़ जाता है। जिससे विभिन्न प्रकार की बीमारियां उत्पन्न हो रही है। जो देश और समाज के लिए हितकर नहीं है। शोध में 87 प्रतिशत लोगों का मानना है कि दीपावली में जलाए जाने वाले बम-पटाखे पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। पर्यावरण संरक्षण में सरकार की भूमिका के बारे में 62 प्रतिशत लोगों का मत है कि पर्यावरण संरक्षण में सरकार का रवैया ढीला है। पर्यावरण प्रदूषण में सांस्कृतिक, धार्मिक

मान्यताओं पर बात करते हुए 93 प्रतिशत प्रतिभागियों का मत है कि पूजा सामाग्री का विसर्जन पर्यावरण प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है वहीं मूर्तियों के विसर्जन के संबंध में 94 प्रतिशत और अस्थियों के विसर्जन को 80 प्रतिशत प्रतिभागी इसे पर्यावरण के लिए हानिकारक मानते हैं।

शोध संबंधी तथ्यों और आंकड़ों के संकलन के लिए सौ प्रश्नावली/अनुसूची को आधार बनाया गया है। प्रस्तुत शोध नागपुर के शहरी क्षेत्र में रहने वाले प्रतिभागियों के विचारों और सुझाओं पर विशेष रूप से केंद्रित है। शोध में 18 वर्ष से अधिक आयु के महिला एवं पुरुष प्रतिभागियों को शामिल किया गया है। जिनसे पर्यावरण जागरूकता संबंधी अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त की गई है।

शोध अध्ययन में डॉ. कठेरिया के अलावा संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के सहायक प्रोफेसर, संदीप कुमार वर्मा, पीएच.डी. शोधार्थी, निरंजन कुमार, एमएससी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं एम.ए. जनसंचार के छात्र, अविनाश त्रिपाठी, पंकज कुमार, पूर्णिमा झा, पद्मा वर्मा एवं आईसीएसएसआर परियोजना के शोध सहायक, नीरज कुमार सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

39 प्रतिशत लोगों का मानना है कि पर्यावरण जागरूकता और संकट से बचाव को प्रचारित-प्रसारित करने में टेलीविजन माध्यम की भूमिका महत्वपूर्ण है वहीं 37 प्रतिशत मत सोशल मीडिया, समाचारपत्र 22 प्रतिशत और रेडियो को 02 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। पर्यावरण असंतुलन के कारण प्राकृतिक आपदाएं बढ़ी है। 89 प्रतिशत प्रतिभागी आनेवाली प्रकृति आपदाओं के पिछे पर्यावरण असंतुलन को जिम्मेदार ठहराते हैं। इकोफ्रेंडली दीपावली मनाने की बात पर लोगों ने अपने विचारों में पर्यावरण संरक्षित करने के लिए दीपावली के उत्सव पर पेड़ लगाने की सलाह दी वहीं कुछ प्रतिभागियों ने दीवाली को पटाखों से न मनाकर मिठाई वितरण कर मनाना चाहिए। कुछ प्रतिभागियों ने इसे दीपों का त्योहार बताया। कुछ प्रतिभागी का मत है कि दीपावली उत्सव स्वच्छता का प्रतिक है अतः इस स्वच्छता के उत्सव में हमें प्रदूषण फैलाने वाली किसी भी वस्तु का उपयोग नहीं करना चाहिए।